प्राक्कथन

इस निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट को भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक के निष्पादन लेखापरीक्षा दिशानिर्देशों तथा लेखा एवं लेखापरीक्षा विनियम, 2007 के अनुसार तैयार किया गया है।

निदेशक मंडल ने ₹ 43,142 करोड़ की कुल अनुमानित लागत पर जून 2006-जुलाई 2007 के दौरान अपने पांच एकीकृत इस्पात संयंत्रों एवं सेलम इस्पात संयंत्र में आधुनिकीकरण एवं विस्तारण योजना (एमईपी) के अंतर्गत परियोजनाओं के कार्यान्वयन के लिए सिद्धांतत अनुमोदन दिया। एमईपी वर्ष 2010 तक 13.83 मिलियन टन (एमटी) की मौंजूदा प्रतिष्ठापित हॉट मेटल निर्माण क्षमता से 23.46 एमटी प्रति वर्ष की क्षमता तक वृद्धि करेगा। जून 2009 में, कम्पनी ने आबद्ध खानों के विकास एवं संवर्धन के लिए ₹ 10,264 करोड़ निर्धारित किए और इस अतिरिक्त वित्तीय भार के कारण लगभग कुल ₹ 18,375 करोड़ के एमइपी के पैकेजो को आस्थगित कर दिया गया था, जिसके लिए आदेश तब तक नहीं दिए गए थे। ₹ 2,307 करोड़ की लागत के सेलम इस्पात संयंत्र की एमईपी परियोजनाओं को सितम्बर 2010 तक पूरा कर दिया गया था। पांच एकीकृत इस्पात संयंत्रों में अन्य परियोजनाओं में विलंब हुआ था जिन्हें 2015 के दौरान समापन हेतु नियत किया गया था। एमईपी परियोजनाओं की अनुमानित लागत ₹ 66,851 करोड़ तक बढ़ गई थी।

यह निष्पादन लेखापरीक्षा आधुनिकीकरण एवं विस्तारण परियोजना (एमईपी) के कार्यान्वयन की जांच करने के लिए की गई थी। मार्च 2013 तक दिए गए ₹ 48,810 करोड़ मूल्य के 852 एमईपी ठेकों में से, ₹ 43,825 करोड़ (90 प्रतिशत) मूल्य के 244 ठेकों का समीक्षा हेतु चयन किया गया था। ₹ 37,274 करोड़ मूल्य के ₹ 100 करोड़ या अधिक के सभी ठेकों की लेखापरीक्षा में समीक्षा की गई थी।

लेखापरीक्षा ने इस निष्पादन लेखापरीक्षा को करने में कम्पनी तथा इस्पात मंत्रालय द्वारा दिए गए सहयोग एवं सहायता के लिए आभार प्रकट किया है।